इक्कीसवीं सदी के हिंदी साहित्य में किसान और मजदूर विमर्श

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

इक्कीसवीं सदी के हिंदी साहित्य में किसान और मजदूर विमर्श

डॉ. सुनिल चव्हाण

नमूना • SAMPLE

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस
दिल्ली (भारत)

द्वारा प्रकाशित



अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस

Publisher, Distributor, Exporter having an Online Bookstore

एल–9ए, प्रथम तल, गली न0 42,
सादतपुर एक्सटेंसन, दिल्ली–110094 (भारत)
Phone : 9968628081, 9555149955, 9013387535
E-mail : akhandpublishinghouse@gmail.com
akhandpublishing@yahoo.com
Website : www.akhandbooks.com

इक्कीसवीं सदी के हिंदी साहित्य में किसान और मजदूर विमर्श

संस्करण : 2021
© सम्पादक
ISBN: 978-93-90870-09-7

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी हिस्से को प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इलेक्ट्रॉनिक या किसी अन्य माध्यम द्वारा पुनः प्राप्ति समेत किसी भी रूप में प्रतिलिपिकृत, अनुवादित, संगृहीत नहीं किया जा सकता है और न ही किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम द्वारा इसे प्रसारित किया जा सकता है।

इस पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं जिसका प्रकाशक से कोई संबंध नहीं है।

भारत में प्रकाशित

झपसू यादव द्वारा "अखण्ड पब्लिशिंग हाउस' के लिए प्रकाशित। वी.एम. ग्राफिक, दिल्ली द्वारा कवर डिजाइन व शब्द संयोजन तथा आरना इंटरप्राइजेज, दिल्ली से मुद्रित।

SAMPLE

मनोगत

चौबीस वर्ष पूरे हो गए हैं, हमारी शिक्षा संस्था को। न्यू एज्युकेशन सोसायटी लांजा ने महाविद्यालय शुरू कर कोंकण के लांजा जैसे छोटे से तहसील में उच्च शिक्षा का बीज बोया था। आज यह बरगद बन गया है। उच्च शिक्षा के अभाव में कोंकण का यह सुंदर तहसील काफी पिछड़ गया था। उच्च शिक्षा के लिए जिला रत्नागिरी या मुंबई जैसे महानगरों में छात्रों को जाना पड़ता था। जो गरीब किसान और मजदूर परिवारों के लिए काफी खर्चीला और कठिन कार्य था। इस बात को समझ कर आदरणीय संस्था के प्रणेताओं ने इस कमी को पूरा करने की ठान लीं। और सन 1996 में अपने इस विचार को अंजाम दिया। जिससे ग्रामीण छात्र और छात्राओं को उच्च शिक्षा के अवसर उपलब्ध हुए हैं। अतः न्यू एज्युकेशन सोसायटी लांजा के सभी संचालक सदस्यों का संपूर्ण तहसील सदैव ऋणी है।

आरंभ में कला और वाणिज्य के रूप में शुरू हुआ महाविद्यालय सन 2008 में विज्ञान की शाखा के साथ परिपूर्ण बन गया है। स्नातक के साथ ही स्नातकोत्तर शिक्षा भी शुरू हो गई है। आज एम. कॉम. अकौंटन्सी, कॉमर्स, एम. ए. हिन्दी, और एम. एस.सी. केमिस्ट्री, बॉटनी और जूलॉजी आदि स्नातकोत्तर शाखाएं भी शुरू हैं। महाविद्यालय ने अब तक तीन बार नॅक मानांकन प्राप्त किए हैं। तीसरा मानांकन ए श्रेणी के साथ प्राप्त हो चुका है। अब अगले वर्ष चौथे नॅक मानांकन की तैयारी में महाविद्यालय जुटा है।

अचानक आई महामारी ने समूचे विश्व के मानवी जीवन को रोक लगाई। इससे महाविद्यालय की शिक्षा का चक्र भी रुक गया। परंतु निरंतर अध्ययन अध्यापन के साथ शोधकार्य की ऊर्जा बराबर बनी रही। ई अध्यापन प्रणाली से अध्ययन अध्यापन की चर्चा शुरू हुई। और मुंबई

विश्वविद्यालय ने समय की मांग को पूरा करने का निर्णय लिया।

हिन्दी विभाग ने आज तक दो राष्ट्रीय संगोष्ठियों को सफलतापूर्वक संपन्न किया है। अतः अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित करने की योजना बनाई और इस मानस को अंजाम देने का फैसला किया। मुंबई विश्वविद्यालय के पूर्व अध्यक्ष तथा हैदराबाद विश्वविद्यालय के वर्तमान प्रोफेसर डॉ. विष्णु सरवदे जी के मार्गदर्शन में इस ई संगोष्ठी की योजना बनाई। हमारे महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. अरविंद कुलकर्णी जी के समक्ष प्रस्तुत प्रस्ताव रखा। उन्होंने किसी भी तरह के खर्चे को टाल कर इस ई संगोष्ठी के आयोजन की स्वीकृति दी।

फिर मार्गदर्शक विद्वजनों से संपर्क किया। उन्होंने अपनी तमाम व्यस्तताओं के बावजूद इस ई संगोष्ठी के लिए अनुकुलता दर्शायी। तकनीकी अव्यवस्था को ध्यान में रखते हुए यह अंतर्राष्ट्रीय ई वेबिनार टेलिग्राम ॲप पर सफलता पूर्वक संपन्न हुआ। इसके लिए न्यू एज्युकेशन सोसायटी लांजा के अध्यक्ष आदरणीय श्री जयवंतभाऊ शेट्ये जी और विद्यमान संचालक मंडल, मॉरीशस की आदरणीय डॉ. अलका धनपत मॅडमजी, हैदराबाद के गुरुवर्य डॉ. विष्णु सरवदे जी, हिन्दी के वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. श्यौराज. सिंह बेचौन जी दिल्ली, हिन्दी के अन्य वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. कालीचरण स्नेही जी लखनऊ, मित्रवर प्रोफेसर डॉ. अशोक धुलधुले जी नाशिक, प्रोफेसर डॉ. हूबनाथ पाण्डेय जी मुंबई, असो. प्रोफेसर डॉ. जीभाऊ मोरे जी कोपरगांव, तथा डॉ. शीला भास्कर जी हुबळी कर्नाटक आदि सभी का विनम्रता के साथ हार्दिक आभार ज्ञापित करता हूं। जिनके मार्गदर्शन के से हम सभी लाभान्वीत हुए है। साथ ही सभी आलेख प्रस्तोताओं का भी हार्दिक आभार ज्ञापित करता हूं।

इस ई संगोष्ठी को सफलतापूर्वक संपन्न करने के लिए सभी सहभागी प्रतिभागियों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। साथ ही प्राचार्य डॉ. अरविंद कुलकर्णी जी, उपप्राचार्य डॉ. काशीनाथ चव्हाण जी, हिन्दी विभाग के मेरे सहयोगी और इस अंतर्राष्ट्रीय ई वेबिनार के सहसंयोजक डॉ. राहुल मराठे जी, तकनीकी सहायक प्रा. सिद्धेश खवळे जी, सभी प्राध्यापक एवं प्राध्यापकेतर कर्मचारियों का भी हार्दिक–हार्दिक आभार ज्ञापित करता हूं, जिनकी प्रेरणा, मार्गदर्शन और सहयोग के बिना इस ई संगोष्ठी की

सफलता की कल्पना नहीं की जा सकती।

इस कार्यक्रम की तैयारी में समय–समय पर परामर्श देते हौसला बढ़ाने वाली मेरी अर्धांगिनी सौ. मीरा और ई तकनीकी में सहायता करता चि. अक्षय इनका आभार कैसे व्यक्त करूं ? इनके ऋण में ही मैं रहना चाहूंगा।

इस संगोष्ठी को पुस्तक के रूप में आकार देने वाले श्री विरेन्द्र कुमार यादव अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली आपने इस रचना को आकार दिया। इसलिए इनके विशेष आभार ज्ञापित करता हूँ। अतः यह रचना आपके हाथों में सौंपते मुझे बेहद खुशी हो रही है। यह आपको किसी भी रूप में सहायक सिद्ध होती है तो मैं इस रचना की सफलता समझूंगा।

धन्यवाद।

डॉ. सुनिल चव्हाण
सहयोगी प्राध्यापक एवं शोध निर्देशक,
अध्यक्ष, पदव्यूत्तर हिंदी विभाग,
कला वाणिज्य आणि विज्ञान महाविद्यालय,
लांजा, जि. रत्नागिरी।
महाराष्ट्र
पिन – 416710

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

प्रस्तावना

किसी ने भी नहीं सोचा था और न तो कहीं पढ़ने में आया था कि, सन 2020 में कोई महामारी आने वाली है। अपने आप को बचाने के लिए अपने–अपने घर में परिवार समेत कैद रहना होगा। न तो किसी ने इस प्रकार का भविष्य ही व्यक्त किया था और न तो कोई अंदाज़ा ही किसी ने लगाया था। लेकिन यह हो गया। महामारी ने समूचे विश्व को अपनी चपेट में ले लिया। एक से शुरू हुई मरीज़ संख्या सैंकड़ों, लाखों को पार करती करोड़ों में पहुंच गई। न तो अब तक कोई ठोस इलाज और न ही कोई खास दवा इस पर तैयार हुई। प्रयास जारी हैं ज़िन्दगी बचाने के, लेकिन मौतें भी लाखों पार कर रही हैं। मनुष्य को बचाने में मनुष्य ही जुटा है, कोई देवता, भगवान, कोई गॉड, अल्लाह और न तो ईसा मसीहा इस मानव जीवन और मानवता को बचाने प्रकट हुआ और न ही कोई ऐसा चमत्कार ही। जो कुछ अब तक रोकथाम चल रही है, वह विज्ञान, वैज्ञानिक और वैद्य अर्थात डॉक्टर द्वारा आदि द्वारा ही प्रयास हुए हैं। जिसके नतीजे भी काफी हद तक सफल और सकारात्मक हैं। हाँ लेकिन इस महामारी ने मनुष्य की सोच, जीने की पद्धतियां काफी हद तक बदल दी। इसके कई अच्छे और बुरे नतीजे सामने आए हैं। अच्छे कम ही नज़र आते हैं, बुरे ही अधिक रहे हैं।

इस महामारी ने समूचे विश्व के मानवी जीवन को एक झटके में रोक लगाई। जैसे कोई गाड़ी ब्रेकडाउन हो गई है। और विश्व में नया शब्द रूढ़ हो गया – लॉकडाउन। इसी तरह होम क्वारंटाइन, पर्सनल डिस्टन्स, मास्क और सेनिटाइजर आदि शब्द भी शहर वासियों से लेकर गांव वासियों तक आम हो गए हैं। सारी खेती, उद्योग, व्यापार, शिक्षा,

SAMPLE

मनोरंजन, प्रवास आदि जैसे थम से गये। लेकिन इस लॉकडाउन ने लाखों उद्योगों को हमेशा के लिए बंद किया, खेती की उपज खेती में ही सड़ गई। बाज़ार बंद होने से सभी उत्पादों की खरीद–फरोख्त बंद हुई। मवेशियों का लाखों लिटर दूध ख़राब हो गया। इससे किसानों और मजदूरों पर दोहरी मार पड़ी। किसानों की खेती में लगाई लागत और तैयार फसल दोनों बेकार गई। कर्ज़ से वे चौपट हो गए। कल कारखानों के बंद होने से सारे मजदूर दाने–दाने को मोहताज हो गए। शहरों की झुग्गी–झोपड़ियां खाली और सूनी हो गईं। सभी मजदूर मिले जो वाहन नहीं तो पैदल ही अपने–अपने घर की ओर निकल पड़े। अनेकों ने दूसरे राज्यों तक पैदल चलते–चलते रास्तों में ही दम तोड़ दिया। अनेक बच्चे रास्ते में ही पैदा हो गए तो अनेक बच्चों ने रास्तों पर आख़री सांस लीं। एक ओर जहां अस्पताल में महामारी से दम तोड़ चुके अपनों की लाशें परिजनों को नहीं मिलती थीं वही दूसरी ओर वर्ण भेद के चलते कई लाशें शमशान का इंतज़ार भी करती नज़र आतीं रहीं। खास कर किसानों और मजदूरों के साथ ये घटनाएं और भी दर्दनाक हुई थीं।

औषधी कंपनियों के नए सिरे से व्यापार शुरू हुए। मनुष्य जीवन बचाने के लिए डॉक्टर, सिस्टर, ब्रदर, मेडिकल कर्मचारी, शासन व्यवस्था, पुलिस प्रशासन, शिक्षा विभाग आदि सभी मुस्तैदी के साथ डटे रहे। लेकिन मनुष्य को बचाते– बचाते किसानों की खुदखुशियां बढ़ गईं। उनके परिवार बिखर गए। मजदूर और उनके परिवार भूखे मरने लगे। सरकारी यंत्रणाएं धरी की धरी रह गईं। जहां किसानों और मजदूरों की कतारें दानी गुणी महात्माओं के दरवाज़े पर भीख मांगते दिखाई देने लगीं, वहीं बैंक के सामने भी ऐसे ही नज़ारे दिखाई देते रहे, जो सरकारी सहायता के रूप में खाते पर जमा पांच सौ रुपए पाने के लिए धूप और महामारी की चिंता किए बिना घंटों खड़े रहते रहे। यूं कहें कि इन दोनों वर्गों के हालात बेहद बद्तर हुए हैं।

टीवी चैनलों पर यहीं खबरें आंकड़ों समेत प्रसारित होने लगीं। देख सुन कर बस सुन्न हो जातें। सोच विचार कहीं थम से जातें। फिर एक विचार मन में आया, क्यों न इस विषय पर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विचार मंथन किया जाए, और हो सके तो कुछ सुझाव कुछ नवनीत ही पाया जाए। इस महामारी में देश–विदेशों के किसानों और मजदूरों के जीवन

किस तरह प्रभावित हुए हैं यह देख आगे चल कर इससे किसी निष्कर्ष पर पहुंच कर किसी को सुझाव ही दिया जाए। इसी सोच के साथ अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ई संगोष्ठी आयोजित करने का फैसला लिया गया। इसी तरह देश–विदेशी विद्वजनों के विचारों से जुड़ने तथा लाभान्वित होने का मौका प्राप्त कर विद्वजनों को इस विचारधारा से जोड़ कर एक वैचारिक और मानवता वादी सहायता आंदोलन शुरू करने की ठान ली। सभी जुड़े विभिन्न प्रांतों और देश के विद्वजनों के विचारों को एक सूत्र में पिरो कर पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित करने की योजना बनाई। जिससे इन विचारों को अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाया जा सकें।

अतः यह एक दस्तावेज जो किसानों और मजदूरों को भी मार्गदर्शक होगा। इन बिन्दुओं पर विचार तथा शोध कार्य करने वाले शोधकर्ताओं को भी यह रचना मार्गदर्शक बनेगी, यही सोच कर विद्वजनों से शोधालेख मंगवाए गए। आशा है कि आपको यह वैचारिक ग्रंथ आपके विचारों को दिशा देने में तथा शोध कार्य में सहायक सिद्ध होगा।

धन्यवाद।

डॉ. सुनिल चव्हाण

नमूना • SAMPLE

अनुक्रमणिका

	मनोगत	v
	प्रस्तावना	xi
1.	**संघर्ष से संघर्ष तक** –डॉ. सुनिल महादेव चव्हाण	1
2.	**हिन्दी साहित्य में मजदूर एवं किसान विमर्श (मॉरीशस के संदर्भ में)** –डॉ. अलका धनपत	9
3.	**इक्कीसवीं सदी के हिंदी साहित्य में किसान और मजदूर (खेतिहर और दिहाड़ी मजदूरों के विशेष संदर्भ में)** –प्रो. अशोक धुलधुले	16
4.	**हिंदी साहित्य में मजदूर** –डॉ. हूबनाथ पांडेय	24
5.	**संजीव के 'फाँस' उपन्यास में चित्रित किसान एवं मजदूर विमर्श** –डॉ. जिभाऊ शा. मोरे	30
6.	**'उजास' नाटक में चित्रित मजदूर विमर्श** –डॉ. राजाराम कानडे	36
7.	**मिल मजदूर परिवार की त्रासदी – 'अधान्तर' नाटक** –डॉ. राहुल मोहन मराठे	46

SAMPLE

8. 'धरती का बाप' काव्यसंग्रह में चित्रित किसान विमर्श 55
—डॉ. देवीदास बोर्डे

9. भारतीय किसान का वर्तमान जीवन संघर्ष और त्रासदी 62
—डॉ. पंडित बन्ने

10. इक्कीसवी सदी के साहित्यकार असगर वज़ाहत के उपन्यासों में किसान विमर्श 66
—डॉ. एस.टी.आवटे

11. किसान जीवन की कथाः 'बारोमास' 70
—प्रा. नवनाथ जगताप

12. संजीव जी के 'फांस' उपन्यास में किसान विमर्श 77
—डॉ. मंगला पांडुरंग भवर

13. हिंदी कथा, साहित्य में किसान विमर्श 84
—डॉ. प्रमोद एस. मेश्राम

14. आखिरी छलांग उपन्यास में किसान त्रासदी 91
—डॉ. शीला भास्कर

15. इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविताओं में चित्रित किसान का जीवन 99
—डॉ. पांडुरंग महालिंगे

16. फांस : कृषक वेदना का महाकाव्य 106
—डॉ. संगीता सूर्यकांत चित्रकोटी

17. डॉ. विवेकी राय के 'सर्कस' कहानी संग्रह में किसान विमर्श 113
—प्रा. देविदास बामणे

18. किसान विमर्श : 'बाज़ार में रामधन' कहानी के संदर्भ में 120
—प्रा. डॉ. विनायक खरटमल

SAMPLE

19. चंद्रकांत देवताले की कविता में किसान चेतना 125
—प्रा. हंबीरराव चौगले

20. हिन्दी उपन्यासों में किसान एवं मजदूर का यथार्थ चित्रण 130
—डॉ. शंकर गंगाधर शिवशेट्टे

21. 21 वीं सदी के हिंदी नाटक में किसान विमर्श 138
—तितिक्षा जी वसावा

आलेख लेखक परिचय 146

लेखक परिचय 148

नमूना • SAMPLE